ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरुस्वाहा - ॥ ६ ॥
ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव ।
यद् भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा ॥
ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम स्वाहा ॥

सायंकालीन आहुति के मन्त्र

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ---- ॥ १ ॥
ओ३म् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा -- ॥ २ ॥
इस तीसरे मन्त्र को मन में उच्चारण करके आहुति देवें ।
ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा-- ॥ ३ ॥
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या ।
जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ----------- ॥ ४ ॥

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा --------------- ॥ १ ॥
ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा --------- ॥ २ ॥
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ----------- ॥ ३ ॥
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः
प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ----------- ॥ ४ ॥
ओम् आपो ज्योती रसोऽमृतं
ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ---------- ॥ ५ ॥

अब तीन बार गायत्री मन्त्र से आहुति देवें

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

पूर्णाहुति मन्त्र

ओ३म् सर्वं वै पूर्ण ꣳ स्वाहा ॥

॥ इति अग्निहोत्रमन्त्राः ॥

स्थानिक सम्पर्क

यज्ञ–प्रार्थना

पूजनीय प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए ।
छोड़ देवें छल-कपट को मानसिक बल दीजिए ॥
वेद की बोलें ऋचाएं सत्य को धारण करें ।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक सागर से तरें ॥
अश्वमेधादिक रचाएं यज्ञ पर उपकार को ।
धर्म मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को ॥
नित्य श्रद्धा-भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें ।
रोगपीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें ॥
भावना मिट जाए मन से पाप अत्याचार की ।
कामनाएं पूर्ण होवें यज्ञ से नर–नारी की ॥
लाभकारी हो हवन हर प्राणधारी के लिए ।
वायु-जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किए ॥
स्वार्थ भाव मिटे हमारा प्रेम पथ विस्तार हो ।
इदन्न मम का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ॥
प्रेम रस में तृप्त होकर वन्दना हम कर रहे ।
नाथ ! करुणारूप करुणा आपकी सब पर रहे ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत् ॥

हे नाथ सब सुखी हों कोई न हो दुःखारी ।
सब हों नीरोग भगवन् धन धान्य के भण्डारी ॥
सब भद्रभाव देखें सन्मार्ग के पथिक हों ।
दुःखिया न कोई होवे सृष्टि में प्राणधारी ॥

Dz. : vinayak_dhi@yahoo.com


॥ओ३म्॥


यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म (मा.शतपथ ब्राह्मण)१/७/१/५
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा द्वारा स्वीकृत मन्त्र
तथा विधिनिर्देश सहित

दैनिक अग्निहोत्र

"स्वर्गकामो यजेत"
"नौर्ह वा एषा
स्वर्ग्या यदग्निहोत्रम्"
(माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण १/३/३/१५)

"स्वर्ग अर्थात् सुख, शांति स्वास्थ्य, दीर्घायु, विद्या, बल, पुत्र, पशु, धन, सम्पत्ति, यश, कीर्ति तथा मोक्ष तक पहुँचाने वाली नौका अग्निहोत्र (यज्ञ) ही है, इससे स्वर्ग के अभिलाषी को यज्ञ करना चाहिये"

प्रकाशक :
वानप्रस्थ साधक आश्रम
आर्य वन, रोजड़, पो. सागपुर,
जि. साबरकांठा, (गुजरात) ३८३३०७
दूरभाष : (०२७७०) २८७४१७, २९१५५५,२९१४९६
चलभाष : ०९४२७०५९५५०
E-mail : darshanyog@gmail.com • Website : www.darshanyog.org

अथ अग्निहोमन्त्राः

जल से आचमन करने के मन्त्र

ओ३म्अमृतोपस्तरणमसिस्वाहा .... ॥ १ ॥ इससे पहला
ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा .... ॥ २ ॥ इससे दूसरा
ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ..... ॥ ३ ॥ इससे तीसरा

जल से अङ्गस्पर्श करने के मन्त्र

ओं वाङ्म आस्येऽस्तु । .... *इस मन्त्र से मुख का स्पर्श करें*
ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु । .... *इस मन्त्र से नासिका के दोनों छिद्र स्पर्श करें*
ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु । .... *इस मन्त्र से दोनों नेत्रों को स्पर्श करें*
ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु । .... *इस मन्त्र से दोनों कानों को स्पर्श करें*
ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु । ...... *इस मन्त्र से दोनों बाहुओं को स्पर्श करें*
ओं ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु । .... *इस मन्त्र से दोनों जंघाओं को स्पर्श करें*
ओं अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु । ....
.... *इस मन्त्र से शरीर के सभी अंगों पर जल छिड़कें ।*

ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना के मन्त्र

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव ।
यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥ १ ॥

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ २ ॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ३ ॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशेअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ४ ॥

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः ।
योअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ५ ॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोअस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ६ ॥

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥ ७ ॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥ ८ ॥

दीपक जलाने का मन्त्र

ओं भूर्भुवः स्वः ।

यज्ञ कुण्ड में अग्नि स्थापित करने का मन्त्र

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा ।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥

अग्नि प्रदीप्त करने का मन्त्र

ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳसृजेथामयं च ।
अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥

घृत वाली तीन समिधायें रखने के मन्त्र

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय
चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ।
इदमग्नये जातवेदसे—इदन्न मम ॥ १ ॥

इस मन्त्र से पहली समिधा रखें ।

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् ।
आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा । इदमग्नये—इदन्न मम ॥ २ ॥
सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन ।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे—इदन्न मम ॥ ३ ॥

इन दो मन्त्रों से दूसरी समिधा रखें ।

तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि । बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा ।
इदमग्नयेऽङ्गिरसे—इदन्न मम ॥ ४ ॥

इस मन्त्र से तीसरी समिधा रखें ।

पंचघृताहुति

नीचे लिखे मन्त्र को पाँच बार बोलकर घी की पाँच आहुति दें ।

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय
चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ।
इदमग्नये जातवेदसे—इदन्न मम ॥ १ ॥

जल-प्रसेचन के मन्त्र

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व ॥...................... *इस मन्त्र से पूर्व में*
ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥ .... *इससे पश्चिम में*
ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व ॥.................................. *इससे उत्तर में*
ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय । दिव्यो गन्धर्वः
केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥..............
.... *इस मन्त्र से वेदी के चारों ओर जल छिड़कावें ।*

घी की चार आहुतियाँ

ओ३म् अग्नये स्वाहा । इदमग्नये—इदन्न मम ॥
(इस मन्त्र से वेदी के उत्तर भाग में जलती हुई समिधा पर आहुति देवें ।)
ओं सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय—इदन्न मम ॥
(इस मन्त्र से वेदी के दक्षिण भाग में जलती हुई समिधा पर आहुति देवें ।)
ओं प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये—इदन्न मम ॥
ओ३म् इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय—इदन्न मम ॥
(इन दो मन्त्रों से यज्ञकुण्ड के मध्य में दो आहुति देवें ।)

प्रातः कालीन आहुति के मन्त्र

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा .... ॥ १ ॥
ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा .... ॥ २ ॥
ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ...... ॥ ३ ॥
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या ।
जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा .... ॥ ४ ॥

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ।
इदमग्नये प्राणाय—इदन्न मम ----------- ॥ १ ॥
ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा ।
इदं वायवेऽपानाय—इदन्न मम ---------- ॥ २ ॥
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ।
इदमादित्याय व्यानाय—इदन्न मम ------- ॥ ३ ॥
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ॥
इदमग्नि-वाय्वादित्येभ्यः
प्राणापानव्यानेभ्य—इदन्न मम ---------- ॥ ४ ॥
ओ३म् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा --- ॥ ५ ॥